5–4–67 ओमशांति रात्रीक्लास

बाप का परिचय जब तक नहीं है तब तक और बातें फाल्तू हैं। अल्फ ना समझा तो कुछ भी ना समझा। इसलिए ही फार्म भरवाया जाता है कि पता पड़ता है कि किस प्रकार का मनुष्य है।गीता वाले जो हैं उनको सिर्फ कहना है कि बाप कहते हैं कि मुझे याद करो।मनमनाभव जिसको ही वशीकरण मंत्र भी कहते हैं। दुनियां इसका अर्थ नहीं जानती। तुम जानते हो।वश करना है किसको?माया को वश करने का यह मनमनाभव मंत्र है। मनमनाभव कहो वा वशीकरण मंत्र कहो। माया क्या है यह भी नहीं जानते हैं। रावण पर जीत कौन पहनावे?बाप आकर तुम बच्चों को मंत्र देते हैं। जिससे तुम माया जीते जगतजीत बनते हो। मूल बात ही है मनमनाभव। बाप को याद करो। सो भी बाप कहते हैं गृहस्थ व्यवहार में रहते हुये हूबहू जैसे आशिक माशूक को याद करते हैं। यह है रुहानी बात। बाकी सब है जिसमानी। भक्तिमार्ग में सब आशिक एक को याद करते हैं।हनुमान के कितने लाखों आशिक होंगे। अच्छा, उनको हनुमान का दर्शन हुआ तो खुशी होगी।उनको भी वशीकरण मंत्र कहेंगे। उनको वश कर लिया। ....हो गया। तुम रावण को वश कर लेते हो।वशीकरण मंत्र है ना। बाप ही वशीकरण मंत्र देते हैं। राजाई लेने वाले कोटों में कोउ निकलते हैं। बाकी प्रजा बहुत बनती रहती है। तुम वृद्धि को पाते रहेंगे। व्यर्थ तो होता नहीं है। रावणराज्य में सब वेस्ट जाता है। यहां कुछ भी वेस्ट नहीं जाता। इसकी तो प्रारब्ध बनती है।तुम बच्चे ही जानते हो कि भगवान आया है भक्ति का फल देने। भल भक्ति सब धर्मों में है ;परंतु आधा कल्प भक्ति किसने की होगी?भक्ति कब से शुरू हुई है यह किसको भी पता नहीं है। बाबा बिना कोई समझा नहीं सकते। दिल में समझना चाहिए कि जो कुछ होता है ड्रामा के प्लान अनुसार। हम पुरुषार्थ भी करते हैं ड्रामा के प्लान अनुसार। बाप भी कहते हैं मैं भी आकर पुरुषार्थ करवाता हूँ ड्रामा के प्लान अनुसार। मत पर तो चलना पड़ेगा ना। जो मत दूं उस पर चलो। मत तो कल्याण करने के लिए ही देते हैं ना। कोई पूछते हैं मकान बनाउं?यह करूं?यह मत मेरे से क्यों पूछते हो?यह मेरा काम नहीं है। ऐसे तो फिर सब पूछ सकते हैं।ऐसे तो माथा ही खराब कर देवें। यह राय इनसे पूछ सकते हैं। मैं तो आया हूँ तुमको पतित से पावन बनाने के लिए। बाकी उन बातों की राय दादा से लो। मेरा पार्ट ही नहीं है यह राय देने का।ड्रामा पर भी बहुत पक्का खड़ा रहना होता है। ऐसे नहीं कि ऐसे ना करना था। यह ना होता था तो.....बात हुई , भूल हुई, ठीक है यह ड्रामा में था।आगे से खबरदार होकर चलना है।ड्रामा कहने से इतनी फिकरात नहीं आवेगी। भल माया के तूफान तो जरूर सबके पास आवेंगे। बाप कहते हैं मेंरे पास तूफान नहीं आवेंगे। तुम्हारे दादा के पास आवेंगे। यह भी कहते हैं कि अंत तक कुछ ना कुछ होगा। जब आत्मा प्योर हो जावेगी फिर यह शरीर छोड़ना पड़ेगा। यहां रह ना सकेंगे। तूफान बहुत आते हैं। बाबा को तो बहुत आते हैं। इनको तूफान आवेंगे ,अनुभवी होगा तब तो बता सकेगा। बच्चों को यह तो निश्चय है कि अब हमको घर जाना है। बाबा आया है घर ले जाने के लिए।गीता मे अक्षर बड़े अच्छे हैं।बाप कहते हैं मामेकम याद करो। शिवबाबा कहते हैं मैं पतित–पावन हूँ। कृष्ण ऐसे कह ना सके। निश्चय हो जावेगा कि बाप पढ़ाते हैं तो वो तिक2 ना करेंगे। उनके दिल में लग जावेगा। तीर लगेगा उनको जिसने भक्ति बहुत की होगी। टीचर एक ही है ;परंतु समझने वालों में रात–दिन का फर्क हो जाता है।कहां रंक ,कहां राव बन जाते हैं। पुरुषार्थ कर वर्सा पाना है। फादर को फालो करना है। फालो करने लिए बाप कितना उठाते हैं। श्वांस पर भरोसा नहीं है। अविनाशी ज्ञान रतनों से झोली भरनी चाहिए। माया मुंह फिरा देती है। सर्विस नहीं करते हैं तो गोया माया के बन जाते हैं। उससे बचना है। नहीं तो माया के मुरीद हैं। कितने % माया की तरफ हैं। कितने % बाबा की तरफ हैं। बाबा सब देखते हैं। खुद को भी देखना है। गुडनाइट